क्रान्तिकारी आन्दोलन के उतार-चढ़ावों में दृढ़ता से खड़ा रहकर नेतृत्व करनेवाले केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड श्रीधर हमें हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे!

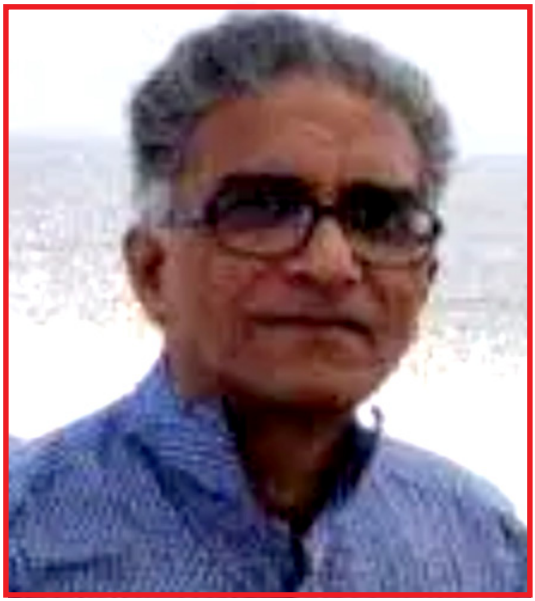

केन्द्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
सितम्बर 2015

क्रान्तिकारी आन्दोलन के उतार-चढ़ावों में दृढ़ता से खड़ा रहकर नेतृत्व करनेवाले केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड श्रीधर हमें हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे!

भाकपा(माओवादी) के केन्द्रीय कमेटी सदस्य और पार्टी के महाराष्ट्र राज्य कमेटी के पूर्व सचिव कॉमरेड श्रीधर श्रीनिवासन (विश्णु, विजय), का 18 अगस्त 2015 के सुबह 9.45 बजे दिल का दौरा पड़ने के कुछ ही मिनटों के बाद शहादत हुआ। पार्टी के नेतृत्वकारी साथियों, सदस्यों और पीएलजीए गुरिल्लाओं के बीच एक माओवादी संघर्ष इलाके में उन्होंने अंतिम सांस ली। वह केवल 57 साल के थे। उनकी मौत काफी आकस्मिक थी क्योंकि उन्हें कोई गंभीर बीमारी नहीं थी और कुछ ही समय पहले हुए एक चिकित्सा जांच में भी उनके स्वास्थ में कोई गंभीर समस्या नहीं मिली थी। लेकिन 2007 में उनके गिरफ्तारी के बाद जेल में बिताए साढ़े छह साल के कठिन दौर ने उनके स्वास्थ पर प्रभाव डाला। यह उनके अदम्य क्रान्तिकारी उत्साह का ही पहचान है कि स्वास्थ की कोइ भी चिन्ता उन्हें संघर्ष इलाके में अपने कॉमरेडों से मिलने की कठिन सफर पर निकलने से नहीं रोक सकी जब 2013 के अन्त में हुई उनकी रिहाई के देढ़ साल बाद आखिरकार उन्हें यह अवसर मिला। इसी सफर के दौरान उनकी शहादत हुई। उस संघर्ष इलाके के कई नेतृत्वकारी साथियों, अलग-अलग कमेटियों से बड़ी संख्या में कॉमरेडों और कई पीएलजीए इकाईयों ने पूरी पार्टी सम्मान के साथ कॉमरेड श्रीधर को अंतिम विदाई दी। नम आंखों से उनको क्रान्तिकारी श्रद्धांजलि पेश किये गये और स्मृति सभा आयोजित कि गयी। भारत के नई जनवादी क्रान्ति के प्रति उनके आजीवन योगदान और देश के शोषित जनता के प्रति उनकी सेवा को याद किया गया। उनके कम्युनिस्ट आदर्शों को याद कर दीर्घकालीन जनयुद्ध को आगे बढ़ाते हुए उनके आदर्शों को जिंदा रखने की शपथ ली।

एक क्रान्तिकारी का जन्म

देश की क्रान्तिकारी वस्तुगत परिस्थिति के एक हिस्से के रूप में क्रान्तिकारी मजदूर वर्ग की पार्टी की मौजूदगी के साथ साथ परिवार में प्रगतिशील मूल्यों और जनवादी वातावरण जैसे सकारात्मक सामाजिक माहौल किसी को एक क्रान्तिकारी के रूप में तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। कॉमरेड श्रीधर एक ऐसे ही परिवार में पले-बढ़े। उनका परिवार अपने दृष्टिकोण में काफी अपारम्परिक था। श्रीधर एक शहरी मध्यम वर्गीय परिवार में पांच भाई-बहनों के बीच सबसे छोटे थे। उनके माता-पिता ने उनके सभी बच्चों में छोटे उम्र से ही पढ़ने की आदत को बढ़ावा दिया। उनके माता-पिता से उत्साहित को श्रीधर ने अपने बचपन से ही ज्ञान के प्रति असीम जिझासा विकसित किया और एक उत्सुक पाठक बन गए। उनके बड़े भाई से प्रभावित होकर उन्होंने गणित और विज्ञान, खासकर ज्योर्तिपदार्थ विज्ञान (Astrophysics) के लिए तीव्र उत्सुकता दिखाई। हालांकि उनके माता-पिता उनके बच्चों की पढ़ाई को लेकर काफी चिंतित थे, फिर भी उन्होंने अपने बच्चों को अपने इच्छा के मुताबिक अपना जीवन व्यतित करने की पूरी आजादी दी। इसलिए अपने भाई-बहनों से एक सम्पूर्ण अलग राह चुनकर जब श्रीध र ने कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर बम्बई शहर में (वर्तमान मुम्बई) उस समय नये-नये उभर रहे मार्क्सवादी-लेनिनवादी(माले) पार्टी के एक पेशेवर क्रान्तिकारी के रूप में क्रान्तिकारी आन्दोलन में शामिल हुए, तब उनके इस निर्णय का समर्थन नहीं करने के बावजूद उनके परिवार ने उनकी राह पर कोई बाधा खड़ी नहीं की। श्रीधर के लम्बे क्रान्तिकारी जीवन के दौरान उनके परिवार के सदस्य कई अवसरों पर उन्हें मदद करने के लिए आगे आये जब उन्हें ऐसी मदद की जरूरत थी।

महाराष्ट्र के क्रान्तिकारी आन्दोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका

महाराष्ट्र और मुम्बई शहर भारतीय क्रान्ति में एक विशेष स्थान रखते है। यह शासक वर्गों का एक महत्वपूर्ण आर्थिक केन्द्र है और इसे देश की आर्थिक राजध ानी भी कहा जाता है। यहां मजदूर वर्ग का अच्छा-खासा जमावड़ा है। एक तरफ जहां इस राज्य के मजदूरों और किसानों के जुझारू आन्दोलनों का एक महान इतिहास है, वही दुसरी तरफ यह जड़ जमाए हुए संशोधनवाद और ब्राह्मणवादी हिन्दु फासीवाद का भी गढ़ रहा है। महाराष्ट्र में जुझारू दलित आन्दोलन और आदिवासी क्रान्तिकारी आन्दोलन का भी गौरवशाली परम्परा रहा है। इस तरह के

विशेषताओं के चलते महाराष्ट्र और मुम्बई ने कम्युनिस्ट क्रान्तिकारियों के सामने हमेशा खास चुनौतियां पेश किया है। जब फासीवादी इंदिरा गांधी सरकार द्वारा लागू किए गए आपातकाल के काले बादल मार्च 1977 में हटने लगे, मार्क्सवादी-लेनिनवादी धाराओं के नेतृत्व में चलनेवाले आन्दोलनों सहित देश में राजनीतिक जनान्दोलनों का एक उभार आया। आपातकाल के बाद कि इसी राजनीतिक परिस्थिति में छात्र समूदाय के बीच मार्क्सवाद चर्चा का एक प्रमुख विषय बन गया। नक्सलबाड़ी से प्रेरित होकर बम्बई शहर में कईयों मार्क्सवादी अध्ययन केन्द्र पनपने लगे। इसी तरह का एक अध्ययन केन्द्र दक्षिण बम्बई के एलफिनस्टोन सरकारी कॉलेज में भी बना। श्रीधर इस कॉलेज के दूसरे वर्ष का छात्र था जो कला में स्नातक डिग्री की पढ़ाई कर रहे थे। वह इस अध्ययन केन्द्र में शामिल हुए। जल्द ही वह मा-ले-मा और मार्क्सवादी-लेनिनवादी राजनीति से गहराई से प्रभावित हुए और न केवल इसमे सक्रिय रूप से भाग लेने लगे बल्कि एक कार्यकर्ता के रूप में अलग-अलग कॉलेजों में छात्रों को संगठित करने लगे। विद्यार्थी प्रगति संगठन (वीपीएस) के बेनर में छात्र गोलबंद होने लगे। 1980 तक आते-आते कई पूर्णकालीक सदस्यों और कार्यकर्ताओं के साथ वीपीएस का संगठन तेजी से बढ़ने लगा। उनके कार्यक्रम को लागू करने के दौरान वीपीएस ने अलग-अलग कॉलेजों में कांग्रेस और शिव सेना के छात्र संगठनों के गुंडों का जुझारू रूप से मुकाबला किया। 1979 में कॉलेज छात्रों द्वारा फीज़ वृद्धि के खिलाफ बम्बई विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक कब्जा आन्दोलन के नेतृत्वकारी कॉमरेडों में श्रीधर भी एक थे। इस क्रान्तिकारी छात्र आन्दोलन के उभार के समय बम्बई शहर और इसके उपनगरीय क्षेत्रों के ज्यादातर कॉलेजों में वीपीएस की इकाईयां थी। वीपीएस के नेतृत्व में जारी छात्र आन्दोलन से प्रभावित होकर गोवा में भी एक जनवादी छात्र संगठन गठित हुआ। श्रीधर ने इस छात्र संगठन का मार्गदर्शन किया। भाकपा(माले) की आन्ध्रप्रदेश प्रादेशिक कमेटी (एपीपीसी) के नेतृत्व में उभरे जगितयाल किसान आन्दोलन से प्रेरित होकर हालही में महाराष्ट्र में गठित माले पार्टी की बम्बई सिटी कमेटी 1979 में इसके सम्पर्क में आयी। मई 1980 में नवगठित भाकपा(माले)(पीपुल्स वार) के साथ बम्बई सिटी कमेटी का विलय हो गया।

1970 के दशक के शुरूआत से विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था एक संकट के घेरे में आ गया जो अगले कुछ सालों में और ज्यादा गंभीर होता गया। इस संकट से उबरने के लिए इजारादारी कॉर्पोरेट घरानों ने दुनियाभर में और ज्यादा आध

ुनिकीकरण का तरीका अपनाया जिसके तहत अस्थिर पूंजी (variable capital) में कटौती के लिए आधुनिक मशीनरी व पूंजीकेन्द्रिक तकनीकों का इस्तेमाल बढ़ाया। इस बदलाव का सबसे ज्यादा असर इन देशों के तथा सभी पिछड़े देशों के मजदूरों पर पड़ा जिन्हें नौकरी से निकाला गया, मजदूरी में कटोटी कि गयी और उन्हें ज्यादा मुश्किल परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर किया गया। विश्व अर्थव्यवस्था में आयी इन बदलावों का प्रभाव भारत के बड़े उद्योगिक केन्द्रों जैसे बम्बई और इसका कपड़ा औद्योग पर भी पड़ा। कुछ बड़े कपड़ा कारखाने जिन्होंने साम्राज्यवादियों के आधुनिक टकनीक और पूंजी के साथ साठगांठ बढ़ाकर आध ुनिकीकरण को अपनाये वो विकसित हुए जबकि बड़ी संख्या में वो कारखाने जो यह बदलाव लाने में असमर्थ थे वो दिवालियापन का शिकार होकर बंद हो गए और इनकी जमीन उभरते निर्माण (रीयल-इस्टेट) व्यापार की जगह बन गयी। इस बदलाव ने बड़ी संख्या में कपड़ा श्रमिकों को बेरोजगार बना दिया और सभी मजदूरों के बीच हड़कंप मचा दी। मजदूरों ने ट्रेड यूनियनों - खासकर शहर के प्रमुख जुझारू ट्रेड यूनियन के नेता दत्ता सामंत की नेतृत्व वाली ट्रेड यूनियन - में संगठित होकर कारखानों की तालाबंदी (लॉक-आउट), बंद होने और छटनी के खिलाफ तीखा विरोध किया। इस तरह के एक उथल-पुथल के दौर में बम्बई शहर में क्रान्तिकारी गतिविधि तेजी से बढ़ने लगी। ये गतिविधि शहर के झुग्गी-झोपड़ियों और मजदूरों के बीच भी व्यापित हुआ। 1981 में नौजवान भारत सभा (एनबीएस) का गठन हुआ जिसके व्यापक प्रचार और आन्दोलन के गतिविधियों के वजह से यह काफी लोकप्रिय हुआ। जैसे जैसे सांगठनिक काम का दायरा बढ़ता गया 1981 में एएमकेयू नाम के एक ट्रेड यूनियान स्थापित किया गया। एएमकेयू और एनबीएस ने 1982 के बम्बई की ऐतिहासिक कपड़ा मिल हड़ताल का पूरी तरह से समर्थन कर उसमें शामिल हुए और कपड़ा मजदूरों व अन्य श्रमिकों के कई जुझारू जनसंघर्षों में भाग लेकर उनके सबसे जुझारू और प्रगतिशील हिस्से का केन्द्र बन गये। कॉमरेड श्रीधर इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने में योगदान देनेवाले संगठकों में से एक थे और हड़ताल के समय कई जुझारू कार्रवाईयों में शामिल हुए। उन जैसे उभरते हुए उर्जावान कार्यकर्ताओं को बम्बई के हमारी पार्टी के कुछ दक्षिणपंथी नेतृत्वकारी तत्वों के विरोध का सामना करता पड़ा जिन्होंने उनके कार्रवाईयों को ''जुझारू अर्थवाद'' (''मिलिटेंट इकोनोम्ज़िम'') का नाम दिया।

फिर भी, कई बड़ी कठिनाईयों का सामना कर बम्बई की कपड़ा मिल हड़ताल समकालीन देश के सबसे बड़े जुझारू संघर्षों में से एक बन गया जिस पर क्रूर राज्यहिंसा थोपा गया था।

बम्बई के अलावा एएमकेयू के बेनर तले थाने, भीवांडी और महाराष्ट्र के कुछ अन्य औद्योगिक केन्द्रों और इनके आसपास के इलाकों के मजदूर संगठित हुए। बम्बई के कपड़ा मजदूरों के ऐतिहासिक हड़ताल के उभरने के कुछ ही समय पहले जून 1980 में पार्टी की नेतृत्व में गढ़चिरोली आदिवासी किसान आन्दोलन शुरू हुआ। बम्बई सिटी कमेटी का भाकपा(माले)(पीडब्ल्यु) में विलय होने के बाद दीर्घकालीन जनयुद्ध विकसित करने के रणनीतिक दृष्टि से केन्द्रीय कमेटी के मार्गदर्शन पर महाराष्ट्र के कॉमरेडों ने नागपुर, बल्लरशाह, चन्द्रपुर और इन शहरों के आसपास के ग्रामीण इलाकों में क्रान्तिकारी गतिविधि विस्तार करने के लक्ष्य से एक विदर्भ दृष्टिकोण तैयार किया। इस दृष्टिकोण के तहत पार्टी की महाराष्ट्र राज्य कमेटी ने पेशेवर क्रान्तिकारियों को विदर्भ भेजना शुरू किया। विदर्भ के किसानों, खासकर भूमिहीन और गरीब किसानों के बीच कृषि क्रान्तिकारी राजनीति का प्रचार के लिए वीपीएस ने 'गांव चलो' अभियान चलाया। इसी तरह की एक अभियान में 1980 के दशक के शुरूआत में श्रीधर को उनके 10 या 12 छात्र साथियों के साथ गढ़चिरोली जिले के सिरोंचा में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उनके मां ने सुदूर बम्बई से चलकर उन छात्रों को जमानत पर बाहर निकाला। 1984 में गढ़चिरोली जिला के कमलापुर गांव में आयोजित क्रान्तिकारी किसान संगठन की (वर्तमान के दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संघ–डीएकेएमएस) पहली जिला सम्मेलन में भाग लेने के लिए जा रहे श्रीधर कुछ अन्य छात्रों के साथ फिर से गिरफ्तार हो गये।

1985 के शुरूआत में कुछ सैद्धान्तिक–राजनीतिक सवालों तथा सांगठनिक मुद्दों को लेकर पार्टी में अंदरूनी संघर्ष सामने आया जिसके चलते केन्द्रीय कमेटी की गतिविधि बंद हो गयी। इस परिप्रेक्ष्य में इस गम्भीर समस्या को सुलझाने के लिए पार्टी के राज्य ईकायियों प्लीनमों के एक भाग के रूप में 1986 में महाराष्ट्र राज्य प्लीनम आयोजित किया गया। इस प्लीनम में रीजनल कमेटियों के कॉमरेडों और महाराष्ट्र के राज्य संयोजक – जो सीसी बहुमत गुट (मेजरिटी ग्रुप) में शामिल थे – के बीच गंभीर मतभेद सामने आये। लगभग इसी समय 1987 के शुरुआत में

महाराष्ट्र राज्य ईकायी भाकपा(माले)(पीडब्ल्यु) से अलग हो गयी। इसी परिप्रेक्ष्य में सितम्बर 1987 में दूसरी राज्य सम्मेलन आयोजित हुई। इस सम्मेलन ने राज्य संयोजक (केन्द्रीय कमेटी सदस्य) द्वारा पेश किए गए दस्तावेजों को खारिज कर श्रीधर और कुछ अन्य कॉमरेडों द्वारा तैयार किए गए वैकल्पिक दस्तावेजों को पारित किया। पहली बार एक नयी राज्य कमेटी का चुनाव किया गया और श्रीधर इसके सचिव बने। जनसंगठनों का निर्माण और वर्ग संघर्ष को विस्तारित करते हुए इस प्रक्रिया में सामने आनेवाले अगुवा तत्वों को पार्टी में भर्ती कर पार्टी को मजबूत और विस्तारित करना इस सम्मेलन का प्रमुख आह्वान था। इस सम्मेलन ने तय किया कि हालांकि केन्द्रीय कमेटी को विघटित करने का निर्णय गलत था, फिर भी बहुमत या अल्पमत के आधार पर फैसला लेकर अभी एकता के लिए जल्दबाजी में आगे नहीं बढ़ना चाहिए और इसके बजाए भाकपा (माले) (पीडब्ल्यु) के सभी राज्य इकाईयों के साथ दोस्ताना सम्बन्ध बरकरार रखकर काम करना चाहिए। इसने यह भी निर्णय लिया कि अखिल भारतीय क्रान्तिकारी छात्र संघ (एआईआरएसएफ) और क्रान्तिकारी संस्कृति का अखिल भारतीय लीग (एआईएलआरसी) जैसे सर्वभारतीय जनसंगठनों के इकाई के रूप में मौजूद राज्य के जनसंगठनों को सक्रिय कर राज्य में इन संगठनों को मजबूत करना चाहिए।

लेकिन पार्टी की इस अंदरूनी संकट ने महाराष्ट्र राज्य के कॉमरेडों को बुरी तरह से प्रभावित किया और 1980 के शुरूआत के जुझारू संघर्षों के दौरान नक्सलबाड़ी क्रान्तिकारी राजनीति के तेजी से बढ़ रहे प्रभाव से प्रेरित होकर आन्दोलन में शामिल होनेवाले कई साथियों के मनोबल को कमजोर किया। इनमें से कुछ हतोत्साहित होकर आन्दोलन से दूर चले गये। कुछ पार्टी सदस्यों ने जबकि पूरी तरह से आन्दोलन से ताना तोड़ लिया, कुछ अन्यों ने उनके गतिविधि के स्तर को कम कर दिये। इसके कारण खासकर बम्बई के जनसंगठनें कमजोर हुई। यही कारण है कि आन्दोलन के विकास और विस्तार के लिए राज्य सम्मेलन के बाद तैयार किए गए ज्यादातर योजनाओं को लागू करना इस माहौल में असंभव हो गया। इसके बावजूद श्रीधर और कुछ अन्य साथियों ने अपने मनोबल को टूटने नहीं दिया, पार्टी लाइन के साथ मजबूती से खड़े रहें और सभी गलत रूझानों के खिलाफ संघर्ष किये। इस कठिन दौर में भी दृढ़ता के साथ खड़े रहने वाले कॉमरेडों के कतार में श्रीधर शामिल थे। पार्टी में बने रहनेवाले कॉमरेडों ने बहाव के खिलाफ तैर कर

पार्टी का बचाव करने का निर्णय लिया और साहस के साथ राज्य में आन्दोलन का निर्माण करने के लिए कठिन प्रयास किए।

आन्दोलन निर्माण की नयी कोशिशें

1980 के दशक के आखिरी भाग में महाराष्ट्र राज्य कमेटी को एक नयी परिस्थिति का सामना करना पड़ा जब आत्मगत शक्तियां कमजोर हुई, गढ़चिरोली क्रान्तिकारी आदिवासी आन्दोलन पर राज्य हिंसा बढ़ने लगी और मार्गदर्शन के लिए कोई केन्द्रीय कमेटी मौजूद नहीं थी। इस परिस्थिति में महाराष्ट्र के कॉमरेडों को विदर्भ दृष्टिकोण इलाके में अपनी ग्रामीण गतिविधियों को बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ा। महाराष्ट्र राज्य कमेटी और बचे हुए कॉमरेडों ने पार्टी की अंदरूनी संकट के बाद ग्रामीण आन्दोलन का निर्माण कर आधार इलाका निर्माण करने के लक्ष्य से नासिक जिला को केन्द्र में रखकर पश्चिमी महाराष्ट्र ग्रामीण दृष्टिकोण तैयार किया। यह इलाका रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था और कई अनुकूल पहलूएं यहां मौजूद थी। 1980 के अंत में यहा राजनीतिक-सांगठनिक काम शुरू हुआ और लगभग 4-5 सालों तक जारी रहा। हालांकि गम्भीर प्रयास किय गये, जनाधार को प्राथमिक स्तर पर बढ़ाया गया और कुछ हद तक अनुभव हासिल किये गये, लेकिन बढ़ते राज्य दमन के चलते जनता के बीच काम करने के लिये जिम्मेदार कुछ कॉमरेडों की गिराफ्तारी, दो राज्य कमेटी सदस्यों के इस इलाके से वापस हटने और इस काम में नियुक्त करने लिये बलों की कमी के वजह से इस आन्दोलन को जारी नहीं रखा जा सका।

कॉमरेड श्रीधर ने कोयला खदान मजदूरों के आन्दोलन व अन्य आन्दोलनों के मार्गदर्शन के उद्देश्य से 1992 में अपने गतिविधियों का मुख्य केन्द्र विदर्भ इलाके में बदली किए। पुलिस मुखबिरों को सजा देने के लिए उन्होंने विदर्भ के शहरी इलाकों में दो एक्शन टीमों का नेतृत्व किया। कुछ महत्वपूर्ण राजनीतिक-सांगठनिक निर्णय लेने और 1986 के प्लीनम में उठाए गए कुछ महत्वपूर्ण सवालों को सुलझाने के लिए सिम्तबर 1992 में महाराष्ट्र राज्य का एक विशेष प्लीनम आयोजित किया गया। इस प्लीनम में प्रतिनिधियों ने कुछ नेतृत्वकारी कॉमरेडों द्वारा पेश किए गए वैकल्पिक दस्तावेजों को खारिज कर राज्य कमेटी द्वारा पेश किए गए दस्तावेजों को पारित किया।

भाकपा(माले)(पीडब्ल्यु) से अलग होने के बाद पहली बार 1988 के अन्त में आन्ध्रप्रदेश राज्य कमेटी (एपीएससी) के प्रतिनिधिमंडल और महाराष्ट्र के प्रतिनिधिमंडल ने दोनों राज्य इकाईयों के बीच दूबारा सम्बन्ध स्थापित किया। उसके बाद से दोनों इकाईयों के बीच मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बरकरार रखे गए। सितम्बर 1990 में आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु राज्य इकाईयों के प्रतिनिधियों को लेकर एक केन्द्रीय प्लीनाम आयोजित कि गयी जिसमें भाकपा(माले)(पीडब्ल्यु) की केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी (सीओसी) का चुनाव किया गया। महाराष्ट्र के राज्य कमेटी के साथ बनाए गए सम्बन्धों को सीओसी ने आगे बढ़ाया। तीन सालों तक कायम रहनेवाले मित्रतापूर्ण सम्बन्धों के इस दौर में दोनों पक्षों के बीच क्रान्तिकारी आन्दोलन के विकास के बारे में रिपोर्टें सांझा किए गए, सीसी संकट के बारे में तथा महाराष्ट्र के कॉमरेडों द्वारा अवसरवादी सीसी बहुमत गुट के खिलाफ चलाए गए सैद्धान्तिक संघर्ष के बारे में और अंदरूरी संघर्ष तथा सही कम्युनिस्ट क्रान्तिकारियों के एकीकरण के मामले में सीसी अल्पमत गुट द्वारा किए गए गलतियों के बारे में गहराई से चर्चा की गई । इन विषयों पर सहमति के वजह से महाराष्ट्र राज्य कमेटी 1994 में भाकपा(माले)(पीडब्ल्यु) में एकीकृत हो गए। कॉमरेड श्रीधर इस पूरे प्रक्रिया के हिस्सा थे और महाराष्ट्र राज्य कमेटी के साथ साथ उन्होने इसमें एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

महाराष्ट्र राज्य कमेटी 1994 में भाकपा(माले)(पीडब्ल्यु) की राज्य इकाई बन जाने के बाद 1995 में हुए आखिल भारतीय विशेष सम्मेलन (एआईएससी) के पहले सभी राज्य इकाईयों का राज्य सम्मेलन आयोजित किया गया। पार्टी की अतीत के व्यवहार का संश्लेषण करने और आन्दोलन की नयी कार्यभार तय करने में इस विशेष सम्मेलन ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस सम्मेलन में महाराष्ट्र के प्रतिनिधियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। खासकर उन्होंने 1987 में सीसी के विघटन के गलत प्रक्रिया के बारे में जोर देकर अपनी दलील रखी और पूरी पार्टी ने उनके मत को स्वीकार किया। इसमें भी कॉमरेड श्रीधर की भुमिका बहुत ही महत्वपूर्ण थी।

2001 में भाकपा(माले)[पीडब्ल्यु] की 9वीं कांग्रेस आयोजित हुई। भारतीय क्रान्तिकारी/मा-ले आन्दोलन के इतिहास में इस कांग्रेस का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। आन्दोलन को आगे बढ़ाने में यह एक महत्वपूर्ण कदम था क्योंकि पार्टी

के पूरे इतिहास का इसने सही समीक्षा किया, दीर्घकालीन जनयुद्ध की रणनीति और कार्यनीति को इसने संवर्धित किया और नये कार्यनीतियों और कुछ नीतियों को निध ारित किया। कांग्रेस के चर्चाओं में कॉमरेड श्रीधर ने सक्रियता से भाग लिया। कांग्रेस में उभरे वाम-अतिवादी लाईन को हराने में और इस संघर्ष के एक भाग के रूप में पार्टी लाईन को सम्बर्धित करने में उन्होने एक सकारात्मक भूमिका निभाया। इस कांग्रेस में श्रीधर को केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुना गया। चार राज्यों - महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरलम - को लेकर कांग्रेस के तुरन्त बाद 2001 में पार्टी की नवगठित दक्षिण-पश्चिम रीजनल ब्यूरो (एसडब्ल्युआरबी) के भी वह सदस्य बने।

2001 में आयोजित राज्य सम्मेलन ने विदर्भ दृष्टिकोण को संवर्धित कर इसे तुरंत लागु करने को राज्य के नये परिस्थिति में पार्टी की मुख्य कार्यभारों में से एक के रूप में पारित किया। इस दृष्टिकोण को लागू करने में सहायक होने के लिए पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने बालाघाट-गोन्दिया डिविजन की जिम्मेदारी महाराष्ट्र इकाई को सौंप दिये। उस समय तक इस इलाके के काम को दण्डकारण्य गुरिल्ला जोन के भाग के रूप में दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी (डीकेएसजेड्सी) मार्गदर्शन करती थी। राज्य कमेटी सचिव और केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में श्रीधर ने इस ग्रामीण आन्दोलन के मार्गदर्शन कि जिम्मेदारी सम्भाली। इस डिविजन में उस समय आन्दोलन गंभीर राज्य दमन और कुछ गंभीर अन्दरुनी समस्याओं का सामना कर रहा था। कार्यकर्ताओं के मनोबल को बढ़ाने तथा आन्दोलन को मजबूत करने के लिए श्रीधर ने भरसक कोशिश की। यहां काम करते समय अपने खराब स्वास्थ का परवाह न करते हुए उन्होंने कभी भी एक नेता के हैसीयत से कोई विशेष छूट या सुविधाओं की मांग नहीं की। वह कार्यकर्ताओं के सभी गतिविधियों में भाग लेने और सभी जिम्मेदारियों में हिस्सेदारी करने की कोशिश करते थे जिसके वजह से उन्होंने अपने साथियों का दिल जीत लिया और उनके प्रिय बन गए। इस इलाके में आन्दोलन को बरकरार रखने तथा इसे क्रमबद्ध रूप से आगे बढ़ाने की उन्होंने यथासंभव प्रयास किए।

सिम्बतर 2004 में भाकपा(माले)[पीडब्ल्यु] और एमसीसीआई के बीच ऐतिहासिक विलय होकर एकीकृत भाकपा(माओवादी) का जन्म हुआ। क्रान्ति का नेतृत्व करने के लिए नयी पार्टी की एक केन्द्रीय कमेटी (सीसी) गठित किया गया

और श्रीधर को इसकी एक सदस्य के रूप में चुना गया। हालांकि उस समय महाराष्ट्र में आन्दोलन कमजोर थी, लेकिन वाजपैयी नेतृत्वधीन एनडीए सरकार की विध्वंसकारी नवउदारवादी नीतियों के खिलाफ बढ़ रहे असंतोष, ब्राह्मणवादी हिन्दू फासीवाद के बढ़ते खतरे आदि ने काफी प्रतिरोध उत्पन्न किया और राज्य में कुछ सामाजिक आन्दोलनों को हमारी पार्टी के करीब लाये। भाकपा(माओवादी) का उदय तथा मुम्बई प्रतिरोध (एमआर-2004) की सफलता ने देश की और खासकर महाराष्ट्र की क्रान्तिकारी आन्दोलन को नयी ऊर्जा से भर दी। सितम्बर 2006 में जमींदारों के नेतृत्व में जातिवादी ताकतों द्वारा खैरलांजी में एक दलित परिवार की क्रूर हत्या के बाद लगभग सभी राजनीतिक पार्टियों ने जब दलितों का विश्वासघात किया, हमारी पार्टी ने दलितों का पूरी तरह से समर्थन किया और जाति उत्पीड़न व भेदभाव से मुक्ति की सही राह को उनके सामने रखा। इसके वजह से महाराष्ट्र के दलितों के सामने माओवादी आन्दोलन एक आशा की किरण बनकर उभरा। इस परिस्थिति में वे जातिवाद-विरोधी जुझारू संगठन के परचम तले गोलबन्द हुए जो जल्द ही राज्य के कई हिस्सों में फैल गयी। इस संगठन के इकाईयां कई जिलों में बनने लगे और काफी संख्या में दलित छात्र और युवा इस आन्दोलन से जुड़ गए। इन सभी कारणों ने इस सदी के शुरुआती वर्षों में महाराष्ट्र में क्रान्तिकारी आन्दोलन की विकास के लिए एक अनुकूल परिस्थिति तैयार किए।

उमड़ रहे जनान्दोलनों पर लगाम कसने, धार्मिक अल्पसंख्यकों का दमन करने तथा क्रान्तिकारी आन्दोलन को कूचलने के लिए शासक वर्गों ने पोटा जैसे दमनकारी कानूनों को लागू कर पूरे देश में फासीवादी तरीकों का इस्तेमाल तेज कर दिया। माओवादी पार्टी के नेतृत्व को निशाना बनाया गया, क्रान्तिकारी जन संगठनों को प्रतिबन्धित किया गया और संघर्ष इलाकों में सलवा जुडूम व सेन्द्रा जैसे फासीवादी अभियानों को विभिन्न रूपों में शुरु किया गया। इस देशव्यापी तीव्र राज्य दमन के बीच ही 2007 के शुरूआत में भाकपा(माओवादी) की एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। श्रीधर ने कांग्रेस के वाद-विवादों व चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया, इनमें अपने मतभेदों को साफ-साफ पेश किया, कांग्रेस में सामने आये वाम-अतिवादी लाईन की आलोचना कि और इस गलत लाईन को हराने में योगदान दिया। कांग्रेस ने उन्हें पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुना। बाद में वह पार्टी की एसडब्ल्डुआरबी के

सदस्य भी बने। कांग्रेस की सफल आयोजन और देश में क्रान्तिकारी आन्दोलन के आगे बढ़ने से बैचेन होकर साम्राज्यवादियों, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवाद, के इशारे पर राज्य ने माओवादी आन्दोलन पर पहले से भी ज्यादा भयानक रूप से हमला करना शुरु किया। पूरे देश में अलग-अलग स्तर के कई नेतृत्वकारी साथी इस हमले में शहीद हुए या गिरफ्तार हुए। महाराष्ट्र में भी यह प्रतिक्रान्तिकारी आक्रमण चलाया गया। आन्दोलन को कमजोर होता देख कॉमरेड श्रीधर को बहुत दुख हुआ। 2007 के मध्य में उनकी खुद कि गिराफ्तारी महाराष्ट्र के आन्दोलन के लिए एक बड़ा नुकसान था।

गिरफ्तारी और जेल जीवन

18 अगस्त 2007 की देर रात को मोस्साद जैसी एपीएसआईबी और मुम्बई पुलिस की खुंखार नक्सल-विरोधी दल ने एक संयुक्त अभियान में कॉमरेड श्रीध र को उनके गुप्त ठिकाने के सामने से गिरफ्तार किया। एपीएसआईबी, नक्सल-विरोध ी दल और केन्द्र व कई राज्यों के विभिन्न खुफिया संस्थाओं के लगातार और तीव्र पूछताछ व मानसिक यातनाओं का कई दिनों तक उन्हें सामना करना पड़ा। कुछ महीनों के बाद जब उन्हें अवसर मिला तो श्रीधर ने पूछताछ सत्रों, गिरफ्तारी और पूछताछ के तरीकों, पूछताछ में उपयोग किए गए नये तकनीकों और उपकरणों, दुश्मन द्वारा उनके निशानें में रहनेवाले लोगों का खुफिया जानकारी इकठ्टा करने और पीछा करने के तरीकों आदि का विश्लेषण कर पार्टी को भेज दिये। दुश्मन के कार्यनीतियों को और भी बेहतर तरीके से समझने में इसने पार्टी कि मदद की। महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, गुजरात आदि के पुलिस ने - जो झूठे मामले दर्ज करने में माहिर है - 60 से भी ज्यादा मामले उनके खिलाफ दायर किए। इतनी बड़ी संख्या में झुठे आरोप थौपकर राज्य ने उनके बंदी जीवन को जितना संभव उतना लंबा खींचने की भरपूर कोशिश की। ऐसी ही एक फर्जी मामले में झूठे सबूतों के आध ार पर श्रीधर को दोषी साबित कर 6 साल कि सजा देने में भी वे कामयाब रहें। उन्होंने अपने बहन को भेजे चिट्टियों में बंदी जीवन की घुटन को और जेल की परिस्थिति के बारे में साफ-साफ लिखा करते थे। इस तरह की एक चिट्टी में उन्होंने लिखा, ''इस बंदी जीवन का सबसे भयानक हिस्सा है आजादी और स्वतंत्रता का खोना। मैं इन चीजों को पहले भी महत्व देता था लेकिन इन्हें खोने

के बाद मेरे लिए इनका महत्व कम-से-कम 1000 गुणा बढ़ गया है। लेकिन मैं परेशान नहीं हूं और अपने मनोबल को टूटने नहीं दिया हूं। मैं जेल जीवन को सीखने की एक अवसर के रूप में देख रहा हूं (हालांकि संभव होता तो मैं इस अवसर को खुशी से छोड़ देता)। जेल में कई तरह के दिलचस्प लोग मिलते हैं - खासकर उस तरह के लोग जिनको मेरे जीवन ने सहज ही सम्पर्क में लाये - ड्रग व्यापारियों, बलात्कारियों, छोटे-मोटे चोर-उचक्कों, अंतर्राष्ट्रीय स्मग्लरों और माफिया सर्दारों। और कई सारे गरीब, असहाय और ज्यादातर बेगुनाह लोगों को भी जिनका एकमात्र गुनाह था गरीबी। जेल का जीवन बाहर के समाज और जीवन का लगभग हुबहु नकल है - फर्क केवल एक बंद माहौल का और शायद समाज का एक ज्यादा घनीभूत रूप का ही है। अमीरों और गरीबों, शोषकों और शोषितों, हिंसा व विसंगतियों के साथ-साथ अच्छाईयों और महानताओं - ये सभी यहां बारीकी से मौजूद हैं। इसलिए मैं यह कल्पना नहीं कर सकता कि जेल कभी भी एक सुधारगृह का भूमिका निभा सकता है जैसे कि जेल के दीवारों में लिखे बड़े-बड़े नारें दावा करते हैं। एक गुनाहगार कैसे सुधर सकता है अगर वही परिस्थितियां जिन्होंने उसें गुनाह की जिंदगी में ढकेल दिया वही परिस्थितियां रात-दिन जेल के चार दिवारियों के अंदर भी ज्यादा तीव्रता से तैयार होता रहता हैं?''

कॉमरेड श्रीधर ने मुक्ति के लिए इंतजार करते हुए उनके साथ जेल में बंद युवा कार्यकर्ताओं को शिक्षित और प्रेरित करने का काम जारी रखा। बिना थके उन्होंने अपने समय को किताबें पढ़ने और घरेलु व अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए उपयोग किए। वे अलग-अलग इस्लामपंथी कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत करते थे और उनके आन्दोलन को समझने की कोशिश करते थे। सुबह का समय विभिन्न जेलों में बंद कॉमरेडों को लम्बी चिट्ट्यां व राजनीतिक नोट्स लिखने में बीतता था। वह और उनके साथी उनके आरोप पत्रों को गहराई से अध्ययन करते थे, नोट बनाते थे और उनके वकिलों को केस की तैयारी में मदद करते थे। जेल में रहने के समय वे बन्दियों के जमानत के लिए और छोटे-छोटे सुविधाएं हासिल करने में मदद करते थे। नियमित शारीरिक कसरत के जरिए अपने आप को स्वस्थ रखने के लिए वह कड़ी मेहनत करते थे।

श्रीधर और महाराष्ट्र के अन्य कॉमरेडों ने राजनीतिक बन्दियों के रूप में उन्हें मिलनेवाले न्यायपूर्ण अधिकारों और अन्य बन्दियों के अधिकारों के लिए जेल के

अंदर वर्ग संघर्ष चलाए। इसके लिए जेल के अन्य साथियों के साथ उन्होंने कई जेल संघर्षों में भाग लिया और कुछ भूख हड़ताल भी किये। इसी प्रक्रिया में उन्होंने कुछ अन्य कॉमरेडों के साथ मिलकर भारतीय न्यायव्यवस्था, दण्डसंहिता (आईपीसी) और सीआरपीसी आदि के बारे में अध्ययन किया और उनके ज्ञान को और विस्तृत किए। उनके लम्बे जेल जीवन ने भारत जैसी एक अर्ध-औपनिवेशिक अर्ध-सामंती देश की न्याय और दण्ड व्यवस्था के विशेषताओं के बारे में करीबी से समझने का अवसर दिया और वह इसके एक ऐसी गंभीर अध्ययन में जुट गये जो बहुत कम लोग ही करते हैं। इस तरह उन्होंने जेल में बिताए समय का सही उपयोग करने कि कोशिश की। फिर भी वह रिहा होने के लिए तरसते थे। वर्ग संघर्ष के प्रमुख इलाकों में उनके कॉमरेडों से मिलने के लिए वह बहुत जल्दी में थे। उनके वकील को लिखे एक पत्र में उन्होंने कहा, ''जेल के अंदर बैठकर अंधे धृत्रराष्ट्र की तरह युद्ध को देखते रहना और युद्ध की जानकारी के लिये परोक्ष स्त्रोतों पर निर्भर होकर बेताबी से इन्तेजार करना बहुत ही हताश करनेवाली परिस्थिति है। आशा करता हूं कि समय रहते ही मैं बाहर आकर जनता के हित में अपनी नगण्य योगदान देने में सक्षम हो सकूंगा। दूर आकाश में युद्ध के काले बादल मंडरा रहे है और वहा बारिश बरसना भी शुरू हो गया है। केवल कुछ ही समय की बात है जब ये बादल हमें इन शहरी इलाकों में भी अपने घेरे में ले लेंगे और उसके जहरीले बूंदों से हमकों भी भिगा देंगे - मुझे तो कम-से-कम इस काल-कोठरी में बैठकर यही दिखाई देता है।''

कॉमरेड श्रीधर को साढ़े छह साल के कारावास के बाद 2013 में जेल से रिहा किया गया। वर्ग संघर्ष के इलाकों में जल्द से जल्द पहुंचने का उनकी इच्छा थी। लेकिन उच्च स्तर के सरकारी निगरानी, उनके फिर से गिरफ्तार होने के खतरे और इन इलाकों में जारी गंभीर दमन के वजह से उनको इस यात्रा के लिए डेढ़ साल और ज्यादा इंतजार करना पड़ा। इस इंतजार के समय को उन्होंने घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति से अपने को अवगत करने के लिए उपयोग किया। खासकर उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन की तथा दुश्मन की बदलती परिस्थितियों के बारे में साफ तौर पर जानने की कोशिश की और देश के बुद्धिजीवियों, लेखकों और विभिन्न शोषित तबकों के सोच-विचार के बारे में जानने की कोशिश की। हाल के समय में बढ़ रहे ब्राह्मणवादी हिन्दू फासीवाद का भी उन्होंने अध्ययन किया। इसके

अलावा, केन्द्रीय कमेटी के सामने रखने के लिए उन्होंने जेल रिपोर्टें और कुछ ठोस सुझाव तैयार किए। इस तरह की विस्तृत तैयारियों और आन्दोलन के भविष्य के बारे में ऊंचे सपनों के साथ उन्होंने 2015 में एक संघर्ष इलाके कि ओर अपनी कठिन यात्रा शुरू की। इसी यात्रा के दौरान 18 अगस्त 2015 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

एक आदर्श कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी

1970 के दशक के अंतिम दौर से लेकर 2006 तक एक छात्र कार्यकर्ता के रूप में अपनी राजनीतिक जीवन शुरू करते हुए एक पेशेवार क्रान्तिकारी, राज्य कमेटी सदस्य, महाराष्ट्र राज्य कमेटी सचिव और केन्द्रीय कमेटी सदस्य के तौर पर कॉमरेड श्रीधर ने विभिन्न पार्टी जिम्मेदारियों को अलग-अलग स्तर पर निभाते हुए ढाई दशक से भी ज्यादा समय तक कारगर तरीके से पार्टी का नेतृत्व करने की कोशिश की। आन्दोलन के हर एक महत्वपूर्ण पड़ाव और उतार-चढ़ावं में वह दृढ़ता से खड़े रहे और पार्टी लाइन का मजबूती से रक्षा करते हुए उसे रचनात्मक ढंग से लागू करने की कोशिश की। विश्व समाजवादी क्रान्ति को सफल बनाने के लिए मा-ले-मा को विश्व सर्वहारा का एकमात्र वैज्ञानिक सिद्धान्त के रूप में उन्होंने ऊंचा उठाए रखा। जब पार्टी के केन्द्रीय और राज्य स्तर पर गलत सैद्धान्तिक और राजनीतिक रूझानों ने अपने सर उठाये, उन्होंने इनके खिलाफ संघर्ष किये और इनसे उभरते हुए आन्दोलन को आगे बढ़ाने में योगदान दिये। आन्दोलन ने खासकर महाराष्ट्र में जब प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना किया तब भी वह डटकर खड़े रहे। केन्द्रीय कमेटी और निचली कमेटियों के बैठकों में तथा अन्य कॉमरेडों के साथ चर्चाओं के दौरान वह अपने मत को साफ-साफ रखते थे और गैरजरूरी चर्चाओं व वाद-विवादों में अपना समय जाया नहीं करते थे। व्यापक पढ़ाई, सर्वहारा अनुशासन, दृढ़ता, वचनबद्धता, सरलता, हसमुख मिजाज और अपने कॉमरेडों के साथ सम्बन्धों में गर्मजोशी - इस तरह के व्यक्तिगत गुणों से उन्होंने हमारे सामने एक मिसाल खड़ा किया। उनके स्वास्थ की समस्याओं के बावजूद पार्टी द्वारा दिए गए कोई भी जिम्मेदारी को सीखने की भावना के साथ पूरा करने में वह कभी भी नहीं हिचकिचाते थे। उनके लम्बे क्रान्तिकारी जीवन के ज्यादातर समय व प्रयास महाराष्ट्र के शहरी इलाकों में पार्टी संगठन और मजदूर वर्ग, छात्र,

युवा, जातिविरोधी संगठनों आदि को विकसित करने के तरफ ही केन्द्रित था। इसलिए शहरी आन्दोलन के विकास में उनकी भूमिका का पार्टी के लिए विशेष महत्व रहेगा। इस तरह दशकों की राजनीतिक-सांगठनिक काम के जरिए उन्होंने परिपक्वता हासिल की और एक आजमाये हुए क्रान्तिकारी नेता के रूप में उभरे।

एक महत्वपूर्ण समय में कई सालों तक कॉमरेड श्रीधर को कैद में रखकर क्रान्तिकारी आन्दोलन में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने से रोकने में दुश्मन की कामयाबी के बावजूद हमारी पार्टी के सर्वोच्च कमेटी के एक सच्चे सदस्य के रूप में वह बन्दी जीवन में हमेशा बाहर के आन्दोलन के विकास के बारे में सोचते थे। इसमें कोई अश्चार्य नहीं कि जेल से बाहर आने तक आन्दोलन में उनकी भूमिका के बारे में वर्तमान समय के लिए एक अच्छी योजना का खाका उनके दिमाग में तैयार हो चुका था। ठीक उसी समय जब वह दुश्मन के चंगुल से निकालकर अपनी आजादी हासिल कर पाये थे और भारतीय क्रान्ति में एक ऊंचे स्तर पर योगदान देने के स्थिति में पहुंचे थे तभी मौत ने उन्हें हमारे बीच से क्रूरता से छीन लिए।

दुनिया में सभी लोग अपने लिए जीते हैं, लेकिन कुछ ही लोग ऐसे होते है जो अपने बारे में या अपने व्यक्तिस्वार्थ के बारे में बिना सोचे समाज के बहुसंख्यक लोगों के लिए, व्यापक शोषित जनता के लिए और पूरी मानवता के लिए जीते व मरते हैं। हालांकि यह बात अब तक के सभी वर्ग विभाजित समाजों पर लागू होते है, लेकिन वर्तमान के युग में, जब साम्राज्यवादी संस्कृति और मूल्यों के प्रभाव से बढ़ रहे आत्मकेन्द्रिकता, स्वार्थ और व्यक्तिवाद का वर्चस्व है, यह बात और भी ज्यादा प्रांसगिक हो जाती है। कॉमरेड श्रीधर जैसे लोग हमें कम ही मिलते हैं जो शोषित जनता के और उनके मुक्तिसंघर्ष के लिए अपनी जीवन को उत्सर्गित करते हैं। यह उतना महत्वपूर्ण नहीं कि किसी का जन्म किस वर्ग, जाति, राष्ट्रीयता या लिंग में हुआ हो। महत्वपूर्ण यह है कि किस लक्ष्य के लिए वह जीता व मरता है और क्या वह इस लक्ष्य के लिए अपने जीवन के एक छोटे समय के लिए संघर्ष करता है या अपने आखिरी सांस तक इसके लिए संघर्ष करता है। कॉमरेड श्रीधर ने अपने जीवन से इस बात का मिसाल खड़ा किया है। साढ़े तीन दशकों तक उन्होंने एक वचनबद्ध क्रान्तिकारी का जीवन बिताये, महाराष्ट्र और भारत में नई जनवादी क्रान्ति की विकास के लिए बिना थके काम किए, इस राह पर आये सभी कठिनाईयों से गुजरे और इसी राह पर अपनी जीवन न्योछावर कर उच्चतम कुर्बानी

दी। कॉमरेड श्रीधर आज हमारे बीच न होते हुए भी उनके कॉमरेडों, परिवारजनों और दोस्तों के बीच उनकी यादें छोड़ गए हैं। उनको जाननेवाले सभी लोग उनके इन यादों को संजोए रखेंगे। उनके काम और उनकी यादें शोषितों को तथा उनके मुक्तिसंघर्ष को हमेशा प्रेरित करते रहेंगे। पूरी पार्टी, पीएलजीए और क्रान्तिकारी जन संगठनों के तरफ से केन्द्रीय कमेटी कॉमरेड श्रीधर को उनकी शहादत पर क्रान्तिकारी श्रंद्धाजलि पेश करती है और उनके सर्वहारा आदर्शों, मा-ले-मा के प्रति उनकी आजीवन प्रतिबद्धता तथा क्रान्तिकारी संघर्ष के दीर्घकालीन राह पर सभी तरह के कठिनाइयों का सामना करने की उनकी दृढ़ संकल्प से सीख लेकर समाजवाद और साम्यवाद की परचम को ऊंचा उठाए रखने की शपथ लेती है।

★★★

पूंजी खूद-ब-खूद अपने आपको समाजवाद में तब्दील नहीं कर लेगा; पूंजीवाद एक इल्ली की तरह विकसित होकर अपने आपको एक तितली में परिवर्तित नहीं कर लेगा। मात्रात्मक बदलाव खूद-ब-खूद आखिरकार गूणात्मक बदलावों का कारण नहीं बन जाऐगा। इसमे एक गूणात्मक स्तर से दूसरे तक छलांग का सवाल है जिसे एक विशेष बल द्वारा ही क्रियान्वित करनी होगी। इस परिप्रेक्ष्य में यह बल है सर्वहारा वर्ग और केवल इसी वर्ग के सचेत कार्यवाही से ही समाजवादी समाज बन सकता है जब पुराने को ध्वस्त कर यह वर्ग नये का निर्माण करेगा।

मार्क्सवाद ही पूंजीवाद और पुराने समाजों का अब तक का सबसे बेहतर और सम्पूर्ण आलोचना है। पूंजीवाद में ऐसा कुछ भी नहीं है (चाहे वह जितना भी नया क्यों न दिखाई देता हो) जो पूंजीवाद की मार्क्सवादी आलोचना के विपरीत हो या इसके द्वारा नहीं समझा जा सकता हो। यह सम्भव है कि कुछ अवधारणाओं को उनके प्रारम्भिक रूपों से आगे और विकसित करने की जरूरत हो, लेकिन इस परिघटना को समझने का खांका मौजूद है। लेकिन मार्क्सवादी विज्ञान को अपने सिद्धान्त तथा क्रान्ति के बाद के समाज के बारे में अपना समझ विकसित करना बाकी है - वह है नये उत्पादन सम्बन्धों का विकास करना और इन समाजवादी सम्बन्धों को बरकरार रखने के लिए भौतिक परिस्थितिओं व चेतना का निर्माण करना। समाजवाद की निर्माण की कोशिशों के पिछली सदी के अनुभव से सही सबक हासिल करने कि जरूरत है।

- कॉमरेड श्रीधर

(नागपूर केन्द्रिय जेल से 30-04-2012
को लिखे गये चिट्ठी का कुछ अंश)